



## आधुनिक वैश्विक परिप्रेक्ष्य में गांधी का सत्याग्रह: एक विश्लेषणात्मक अध्ययन

डॉ. रवि कुमार

(Ph.D.)

गांधी एवं शांति अध्ययन, महात्मा गांधी केन्द्रीय विश्वविद्यालय, बिहार,

Email id: ravikumargupta184@gmail.com

DOI : <https://doi.org/10.5281/zenodo.20140348>

### ARTICLE DETAILS

Research Paper

Accepted: 21-04-2026

Published: 10-05-2026

Keywords:

धार्मिक, वैज्ञानिक, प्रौद्योगिक,  
हिन्द स्वराज, आणविक युग

### ABSTRACT

आज विश्व एक विचित्र चौराहे पर खड़ा है। राजनीति से लोगों का मन ऊब-सा गया है। धार्मिक उन्माद और जातीय संघर्ष इतने बढ़ चुके हैं कि आज सारे संसार में तबाही मची हुई है। मनुष्य न केवल समुद्र और आकाश में ही विचरण कर सकता है, प्रत्युत उसने अंतरिक्ष को भी अपनी सीमाओं में बांध लिया है। मनुष्य की इस आशातीत वैज्ञानिक और प्रौद्योगिक उन्नति ही उसके लिए सबसे बड़ी समस्या बन गई है। यदि मनुष्य केवल बाहरी प्रकृति के नियंत्रण में ही लगा रहता है और स्वयं अपने ऊपर नियंत्रण रखने का प्रयास नहीं करता है तो उसका भविष्य निश्चित रूप से अंधकारमय है। महात्मा गांधी ने आज से 94 वर्ष पूर्व ही इस संकट का आभास प्राप्त कर लिया था। और 1908 में अपनी पुस्तक हिन्द स्वराज में आधुनिक सभ्यता को 'एक रोग और तीन दिन का तमाशा' बताया था क्योंकि, यह सभ्यता न तो धर्म का विचार करती है और न आचरण पर ही ध्यान देती है। उस समय महात्मा गांधी की इस चेतावनी को भूल से राजनीति में आ भटकने वाले एक पूर्वीय साधु के धार्मिक उद्गार के रूप में ही देखा गया था। लेकिन आज इस आणविक युग में उनकी वह चेतावनी सच होती दिखाई देती है। यदि मनुष्य अपनी वर्तमान जीवन-पद्धति, शासन-संस्थाओं, सामाजिक संगठन, आर्थिक रूपों और नैतिक मूल्यों में आमूल परिवर्तन नहीं करते हैं तो इस बात की प्रबल संभावना है कि भूतकाल की अनेक सभ्यताओं की भांति कहीं हमारी सभ्यता भी युगों की धूल के नीचे न दब जाये। प्रस्तुत लेख का उद्देश्य महात्मा गांधी के सत्याग्रह और वर्तमान में इसकी प्रासंगिकता के विभिन्न

पहलुवों को लेखबद्ध करना है। इस शोध-पत्र में गुणात्मक एवं विश्लेषणात्मक अनुसंधान पद्धति का उपयोग किया गया है। अध्ययन मुख्यतः द्वितीयक स्रोतों पर आधारित है, जिनमें महात्मा गांधी के मूल ग्रंथ, पत्र, भाषण, तथा उनके विचारों पर आधारित समकालीन एवं आधुनिक विद्वानों के लेख, शोध-पत्र, पुस्तकें सम्मिलित हैं।

## प्रस्तावना

सत्याग्रह मानवता का जीवन रक्त है जो समकालीन विश्व में मनुष्य के सामाजिक एवं मनोवैज्ञानिक तनाव के लिए उपचार प्रदान करता है। आज वर्तमान परिस्थितियों में जब सांस्कृतिक, धार्मिक एवं भौतिकता का चक्र बिगड़ता जा रहा है, धर्म एवं जाति तथा क्षेत्र के नाम पर हिंसा का ताण्डव हो रहा है और सम्पूर्ण विश्व में महाशक्ति बनने की होड़ में मानवता को त्याग कर हिंसक हथियारों के भण्डार भरे जा रहे हैं ऐसे हिंसा एवं आतंकवाद के वातावरण में सत्याग्रह का महत्वपूर्ण स्थान है। आज के युग में भ्रष्टाचार एवं आतंकवाद व्यक्ति को पीड़ित न करें तो सत्याग्रह की कोई आवश्यकता ही नहीं रहेगी, किन्तु यह स्थिति सम्भव नहीं है। अतः वर्तमान समय में सत्याग्रह का महत्व कम नहीं किया जा सकता। यह राष्ट्र को अन्याय और हिंसा से लड़ने की शक्ति प्रदान करता है, त्याग, आत्मानुशासन और सृजनात्मकता की शिक्षा देता है जिससे जनता को अन्याय एवं हिंसा से लड़ने तथा देश के नवनिर्माण में जुटने की शक्ति प्राप्त होती है। आज देश में जिस सत्याग्रह पद्धति को अपनाया जा रहा है उसमें सत्य का तत्व कम और आग्रह का प्रभाव अधिक रहता है जिससे देश के विभिन्न भागों में हो रहे छोटे-मोटे सत्याग्रहों में हिंसा का समावेश हो जाता है। इस प्रकार आज का सत्याग्रह सत+आग्रह की पद्धति कम तथा दुराग्रह की पद्धति अधिक बन गया है। इसी का दुष्परिणाम यह हुआ कि आज गांधीजी का सत्याग्रह अपना महत्व और वास्तविक स्वरूप खोता जा रहा है।

## सत्याग्रह का अर्थ एवं स्वरूप

सत्याग्रह संस्कृत भाषा के दो शब्दों सत+आग्रह की सन्धि से बना है।<sup>1</sup> जिसका शाब्दिक अर्थ है-सत्य के लिए आग्रह करना, सत्य पर अड़े रहना अथवा सत्य का अनुसरण करना।<sup>2</sup> दूसरी तरफ नकारात्मक रूप से सत्याग्रह का अर्थ है-असत्य एवं अन्याय के विरुद्ध संघर्ष करना।<sup>3</sup> इस प्रकार सत्याग्रह असत्य और अन्याय के विरुद्ध आन्दोलन तथा संघर्ष का नाम है। प्रचलित भाषा में सत्याग्रह का अर्थ अहिंसात्मक प्रतिरोध से किया जाता है, लेकिन सत्याग्रह केवल अहिंसक प्रतिरोध के विभिन्न रूपों असहयोग, सविनय अवज्ञा, उपवास, धरना आदि तक ही सीमित नहीं है। सत्याग्रह अहिंसात्मक प्रतिरोधों से कही अधिक व्यापक है। इसका व्यापक अर्थ है सत्य, जिसमें अहिंसा भी शामिल है सत्य और अहिंसा को मानकर किसी वस्तु के लिए आग्रह करना अथवा सत्य और अहिंसा से

उत्पन्न होने वाला बल ही सत्याग्रह है। सर्वोच्च सत्य है आध्यात्मिक एकता और उसकी प्राप्ति का एकमात्र मार्ग। अहिंसक होने का अर्थ है कि सबसे प्रेम करना और सबके लिए कष्ट सहना। अहिंसक साधनों के द्वारा ही सत्य की शक्ति को सर्वाधिक रूप से सक्रिय किया जा सकता है। एक अहिंसक कार्य पद्धति के रूप में सत्याग्रह का सीधा-सा अर्थ है-ऐसा दृष्टिकोण जिसमें सबके प्रति जाग्रत प्रेम और सबके लिए कष्ट सहने की तत्परता व्यक्ति की प्रेरणा बन जाए। इस प्रकार सत्याग्रह को आत्म-बल अथवा प्रेम बल का नाम दिया जा सकता है। सत्याग्रह सत्य के लिए तपस्या है और इस व्यापक अर्थ में इसके अन्तर्गत सब विधेयक सुधारों तथा सर्वाधिक सेवा के कार्य का समावेश हो जाता है। इस अर्थ में सत्याग्रह संविधानिक पद्धति का निराकरण नहीं करता। सत्याग्रह मनुष्य का जन्मसिद्ध अधिकार है, यह अधिकार ही नहीं अपितु पवित्र कर्तव्य भी है।<sup>4</sup> यदि सरकार जनता का प्रतिनिधित्व नहीं करती और बेईमानी तथा आतंकवाद का समर्थन करने लगती है तो उसकी अवज्ञा करना आवश्यक हो जाता है उसे सब प्रकार के कष्ट सहने के लिए तैयार रहना चाहिए।<sup>5</sup> इस प्रकार जिसे हम सत्य कहते हैं उसे मृत्युपर्यन्त नहीं छोड़ना चाहिए। सत्य के लिए चाहे जितनी तकलीफें उठानी पड़े, सब उठानी चाहिए। परन्तु किसी दूसरे को कष्ट नहीं पहुँचाना चाहिए, क्योंकि कष्ट पहुँचाने से सत्य का उल्लंघन होता है।<sup>6</sup> और इससे सत्याग्रह का मूल अर्थ समाप्त हो जाता है।

गाँधीजी द्वारा प्रतिपादित सत्याग्रह का सिद्धान्त अधिक व्यापक और सार्वभौम महत्व का है। उनके अनुसार परिवार से लेकर राज्य तक मनुष्य को जहाँ कहीं भी अन्याय तथा असत्य का सामना करना पड़े, वहाँ सत्याग्रह का प्रयोग किया जा सकता है। गाँधीजी को स्वयं अपने पारिवारिक जीवन में सत्याग्रह के कुछ मधुर अनुभव हुए थे, जिनका उन्होंने अपनी आत्मकथा में उल्लेख किया।<sup>7</sup> गाँधीजी मानते थे कि सत्याग्रह एकमात्र अस्त्र है जिससे बुराई और अन्याय का प्रतिरोध सम्भव है। यह एक साफ सुथरा, हानिरहित और अत्यधिक प्रभावशाली अस्त्र है। यह न केवल अन्याय और बुराई के प्रतीक का अस्त्र है, बल्कि एक जीवन पद्धति भी है। जीवन की अनेकता में जो एकता होती है, सत्याग्रह उसमें सम्पूर्ण आस्था रखता है। सामाजिक जीवन में सत्याग्रह की वही महत्वपूर्ण भूमिका है जो व्यक्तिगत जीवन में है। सामाजिक कुरीतियों के निराकरण में सत्याग्रह सर्वाधिक प्रभावशाली अस्त्र है।<sup>8</sup> गाँधीजी के मत में सत्याग्रह पवित्र उद्देश्यों की अहिंसक साधनों से प्राप्ति का अविरल मानवीय अध्यवसाय है। इस प्रकार सत्याग्रह का मर्म, सत्य के प्रति आस्था तथा प्रेम की रचनात्मक और क्रियात्मक शक्ति के प्रति निष्ठा में निहित है। गाँधीजी का कथन है कि सत्य और अहिंसा वह तना है जिस पर सत्याग्रह की असंख्य शाखाएँ पुष्पित और पल्लवित होती हैं।<sup>9</sup> प्रेम की शक्ति को जागृत करने वाले विज्ञान के रूप में सत्याग्रह, सत्य के प्रति समर्पित प्रेम का ही दूसरा नाम है। गाँधीजी के अनुसार सत्याग्रह एक ऐसा सिक्का है जिसमें एक ओर प्रेम और दूसरी ओर सत्य अंकित है।<sup>10</sup> सत्याग्रह अपनी सक्रियता के लिए विरोधी की सम्मति पर निर्भर नहीं करता। वह अपनी आत्मा की शक्ति के आधार पर क्रियाशील रहता है। अतः सत्याग्रही के मन में आत्मा की अमरता के प्रति पूर्ण विश्वास होता है



और शरीर को केवल आत्म साक्षात्कार का एक माध्यम मानता है तथा जब से यह लगता है कि उसका शरीर उसके विरोधी को सत्य का ज्ञान होने देने के मार्ग में बाधा उपस्थित कर रहा है तो वह अपने प्राणों को त्यागने में तनिक भी नहीं झिझकता है और सत्याग्रही इस बात के लिए भी अपने मन में लालसा नहीं रखता कि वह अपने भौतिक शरीर को धारण करते हुए ही सत्य की विजय का अनुभव करे। वह अन्ततः सत्य की विजय के प्रति आश्वस्त रहकर अपने भौतिक हितों की चिन्ता से पूरी तरह मुक्त होकर न्याय और सत्य के लिए संघर्ष में जुट जाता है। इस प्रकार सत्याग्रही की विजय का रहस्य विरोधी को सत्य का ज्ञान कराने के प्रयास में, प्राणों का भी त्याग कर सकने की सत्याग्रही की क्षमता में निहित रहता है। गाँधीजी के अनुसार सत्याग्रह का अभिप्राय-सत्य व न्याय के रास्ते पर चलने तथा असत्य व अन्याय के विरुद्ध संघर्ष से है।<sup>11</sup> उनके अनुसार, “सत्याग्रह अन्याय के विरुद्ध एक ऐसा अहिंसक संघर्ष है जिसमें मन, वचन तथा कर्म से हिंसा का त्याग करके, अहिंसा को एक सिद्धान्त के रूप में स्वीकार किया जाता है, जिसमें ऐसे साधनों को अपनाया जाता है जो नैतिक, उचित तथा साध्य के अनुरूप हो तथा जिनके द्वारा संघर्ष का निशाना अन्याय को बनाया जाता है, अन्याय करने वाले को नहीं”।<sup>12</sup>

### चम्पारण सत्याग्रह

चम्पारण सत्याग्रह जहां एक ओर गांधीजी के जीवन का बोझिल सत्य है, वहीं दूसरी ओर राष्ट्रीय जागरण का लक्ष्य बिन्दु है जिसने 30 वर्षों बाद आजादी का रूप ग्रहण किया। दक्षिण अफ्रीका से विशाल अनुभव तथा परिपक्वता लेकर 22 वर्षों बाद जब गांधीजी 1915 में भारत लौटे तो उन्होंने यहां की धरती पर पहला सत्याग्रह प्रयोग चम्पारण में ही किया, जिसने चम्पारण और गांधीजी को पूरे विश्व में चर्चित बना दिया। गांधीजी ने इस आन्दोलन के माध्यम से सत्य, अहिंसा की ताकत क्या है और अशिक्षित तथा निरक्षर जनता के सहारे क्या कुछ किया जा सकता है, यह सारी दुनिया को दिखा दिया। इन सभी हथियारों का विश्लेषण ही चम्पारण सत्याग्रह का मूलमंत्र था। चम्पारण के विषय में अपनी आत्मकथा में गांधीजी ने स्वयं लिखा है कि, बिहार ने ही मुझे सारे हिन्दुस्तान में जाहिर किया। उससे पहले तो मुझे कोई जानता भी न था। बीस साल अफ्रीका में रहने के कारण मैं हल्सी-सा बन गया था। उसके बाद मैं चम्पारण आया और सारा हिन्दुस्तान जाग उठा। पहले मैं जानता भी न था कि चम्पारण कहां है, लेकिन जब यहां आया तो मुझे ऐसा महसूस हुआ कि मैं बिहार के लोगों को सदियों से जानता था और वे भी मुझे पहचानते थे।

### अहमदाबाद मिल मालिक-मजदूर आन्दोलन

अभी चम्पारण का काम पूरा भी नहीं हुआ था कि अहमदाबाद में एक गम्भीर समस्या खड़ी हो गई। जिसमें कपड़ा मिल मजदूरों में बोनस के प्रश्न पर असन्तोष फैल गया मिल मालिकों के प्रतिनिधि सेठ अम्बालाल साराभाई



ने बम्बई में गांधीजी को सारा प्रकरण समझाया कि अब मिल मालिक तालाबन्दी करने वाले हैं जिससे व्यर्थ में बर्बादी होगी और हजारों मजदूरों को क्षति पहुंचेगी तथा शहर में भी अशान्ति फैलेगी।

### खेड़ा सत्याग्रह

अहमदाबाद में मजदूरों की हड़ताल समाप्त हुई ही थी कि खेड़ा सत्याग्रह का संघर्ष आरम्भ हो गया जो 15 दिसम्बर 1917 से 6 जून 1918 तक सक्रिय रूप से चला। सन् 1917 की अतिवृष्टि और 1918 की अनावृष्टि तथा चूहों के कारण फैले प्लेग की वजह से बम्बई का खेड़ा नामक जिला भयंकर संकट में था। अतः यहां के किसान अपनी फसलें एकदम से नष्ट होने की वजह से लगान देने में असमर्थ थे। अतः सरकार को इन कारणों को ध्यान में रखते हुए कानून के अनुसार इनके लगान माफ करने चाहिए थे, क्योंकि कानून में ऐसा प्रावधान था कि यदि फसल का तीन-चौथाई भाग नष्ट हो जाए तो लगान माफ कर दिया जाएगा। किन्तु सरकार ने इस संकट की ओर कोई ध्यान नहीं दिया और बेरहमी से लगान वसूल करती जा रही थी।

अहिंसा सद्गुण के समान है जो परिवार की पाठशाला से शुरू होता है परन्तु एक व्यक्ति को अहिंसा का प्रशिक्षण देना आवश्यक हो तो राष्ट्र के लिए उसी प्रकार का प्रशिक्षण देना और भी अधिक आवश्यक हो जाता है। दिसम्बर 1941 में हिटलर को लिखे अपने दूसरे पत्र में गांधीजी ने नाजी मुखिया को एक देशभक्त माना न कि दैत्य। क्योंकि वे सत्याग्रह के दबाव डालने वाले तत्व का उपयोग कर रहे थे। उन्होंने हिटलर से कहा था कि वे विश्व शांति के लिए अपनी सैनिक गतिविधियों को स्थगित कर दें। विश्व शांति की विशेष धमकियों पर टिप्पणी करते हुए उन्होने कहा था कि उनका शासन सम्बन्धी दृढ़ विश्वास है कि “मौलिक रूप से मानव स्वभाव एक समान होता है इसलिए वह निश्चित रूप से प्यार को आगे बढ़ाने का कार्य करता है।” इस सम्बन्ध में हमारा यह मानना है कि गांधीजी जो कि गैर भौतिकतावादी थे, वे यह नहीं समझते थे कि आर्थिक तथा भौगोलिक विषमताएँ सैनिक क्षमताओं में योगदान देती हैं तथा युद्ध के लिए प्रेरणा देती हैं। महत्वपूर्ण बात तो यह है कि उन्होंने राष्ट्रीयतावाद के युद्ध की ताकत का सीधा मूल्यांकन नहीं किया यदि कोई व्यक्ति इन शर्तों को स्वीकार कर लेता है तो अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर गांधीजी के सत्याग्रह विचारों का उपयोग लोगों को आशान्वित करता। क्योंकि बहुत अधिक संख्या में लोग समझने लगे हैं तथा समकालीन विश्व में शांति के लिए चुनौतियों को नियमबद्ध करने की कोशिश करने में लगे हैं। जब जनवरी 1942 में गांधीजी राष्ट्र को अन्तिम संघर्ष अर्थात् भारत छोड़ो आन्दोलन के लिए तैयार कर रहे थे तो युद्ध और शांति के प्रश्न पर उनकी आत्मा दुःखी थी वे दूसरे विश्वयुद्ध के परिणामों पर गहनता से विचार कर रहे थे। इस युद्ध में विश्व के सभी देश स्वेच्छा से या अनिच्छा से शामिल थे। इस युद्ध की विभिषिका को देखकर गांधीजी को पूरा विश्वास था कि शैतानी ताकत के इस झगड़े के अन्त में न तो विजेता को शांति मिलेगी और न ही पराजित देश को शांति मिलेगी। सम्पूर्ण विला पूर्ण असभ्यता की ओर पीछे चला जावेगा तथा सभी मानव मूल्यों का विनाश करनो दैत्य बन जाएगा। उन्होंने मुद्धरत राष्ट्रों को चेतावनी देते हुए भविष्यवाणी की थी कि “व्यक्तिगतरूप से मैं सोचता हूं



कि इस महायुद्ध का अन्त यहीं होगा जो कल्पित कथा, महाभारत के युद्ध का हुआ था। इस सम्बन्ध में हमारा यही मानना है कि आज सम्पूर्ण विश्व को एक और महाभारत की विभीषिका से बचाने के लिए गांधीजी की सत्य और अहिंसा की तकनीक सत्याग्रह ही एक मात्र विकल्प है।

सत्याग्रह अपने आप में संगठित आत्मा की एकदम सही शांत प्रार्थना है। मानव सभ्यता द्वारा की गई यह प्रार्थना की घटना जापान की अणु बम्ब की दुखभरी घटना के तीन साल पहले की गई थी। परन्तु विश्व में हिंसक शक्तियों का वर्चस्व अधिक होने के कारण मानवता को यह रक्त स्नान की महामारी लगातार सात-आठ वर्षों से पीड़ित कर रही थी। इस अणु बम्ब के प्रयोग से समस्त मानवता कांप उठी और विश्व में हमेशा हमेशा के लिए सैकड़ों युद्ध सीमाओं पर यह रक्त स्नान बंद कर देने की शपथ खायी जाने लगी। ऐसे समय में सभी देशों को गांधीजी की अहिंसा की नीति ही सबसे उपयुक्त लगी क्योंकि इस आणविक युग में अणु विस्फोट के विनाश से गांधीजी की नीति ही मुक्ति दिला सकती है। अणु बम्ब के आगमन के बाद उत्प्रेरक परिवर्तनों ने शांति प्रेमियों के भय को सच सिद्ध कर दिया है। आज इन राष्ट्रों ने कल्पना से परे निर्दयी हथियारों का खतरनाक भण्डार इकट्ठा कर रखा है। लगातार पांच दशकों से विश्व की जनसंख्या पूर्ण तबाही की धमकियों की कीमत चुका रही है। आज इस अणु-युग ने सत्य और अहिंसा के विश्वास का विस्फोट कर दिया है। इस अणु बम्ब ने हमें स्पष्ट दिखा दिया है कि सत्य तथा अहिंसा विश्व में सर्वोच्च शक्ति का निर्माण करते हैं। इसके सामने अणु बम की शक्ति का प्रभाव निष्क्रिय हो जाता है। इस युग में आज हमारी राय में हिंसा एवं अहिंसा दोनों विपरित ताकत अपने रूप में एक दूसरे से पूर्ण रूप से भिन्न हैं। एक नैतिक तथा आध्यात्मिक ताकत है तो दूसरी शारीरिक और भौतिक ताकत है। पहली ताकत दूसरी ताकत से असीम श्रेष्ठ है जिसका अपने स्वभाव से मानव कल्याण का उद्देश्य होता है। आत्मा की ताकत प्रगतिशील तथा अनन्त होती है और इसकी पूर्ण अभिव्यक्ति इसे विश्व में अजेय बना देती है और इससे भी बड़ी बात यह है कि यह ताकत पुरुष, औरत, बच्चे सभी में निवास करती है। बहुत से लोगों में यह ताकत निष्क्रिय पड़ी रहती है। परन्तु उचित प्रशिक्षण से इसको जागृत किया जा सकता है और विशेष यान देने योग्य बात यह है कि इस सच्चाई को पहचाने बिना तथा इसको महसूस किये बिना आत्म विनाश से बचने का कोई मार्ग है ही नहीं। इसका उपचार प्रत्येक व्यक्ति में निहित है कि व्यक्ति जीवन के सभी क्षेत्रों में आत्म अभिव्यक्ति का अपने आपको प्रशिक्षण दे। आत विश्व दुखभरी वेदना की स्थिति से गुजर रहा है। इस समय अणु बमों ने सभी प्रकार की जहिंसा की व्यर्थता को सिद्ध कर दिया है। आज गांधीजी ने अपने जीवनकाल में जिस अहिंसा की चेष्टता साबित की थी एवं जिस शांति के ध्वज को लहराया था उसे उठाये रखने में मानवता अपने आपको असमर्थ पा रही है। आणविक युग उन सुन्दर भावनाओं का तेजी से हास कर रहा है जिन भावनाओं ने मानव जाति को युगों तक जीवित रखा था। अप्रैल 1959 में समान नागरिक अधिकारों के लिए प्रसिद्ध अहिंसक संघर्ष के नेता मार्टिन लूथर किंग ने आचार्य विनोबा से भेंट की थी। सत्याग्रह के महान विज्ञान के इन दोनों व्याख्याताओं के बीच आणविक युग में सत्याग्रह के गहन महत्व पर रुचि पूर्ण वार्ता हुई। डा मार्टिन



लूथर किंग ने विनोबा जी से पूछा कि “कृपा करके बताइये कि इस आणविक युग में सत्याग्रह की संभावनाओं को आप कहाँ तक देखते हैं।” जवाब में विनोबा जी ने कहा था- “आणविक युग एक ऐसा युग है जिसमें हम मानसिक दृष्टिकोणों के संघर्ष को सहन नहीं कर सकते। वर्ना आणविक हथियार निश्चित रूप से पूर्ण सफाया करके मानवता की पूर्ण समस्या को ही हल कर देंगे। इसलिए हमारे दार्शनिकों द्वारा प्रयोग किया गया शब्द ‘सत्याग्रह’ में प्रयोग करने की अनुमति चाहूँगा कि इस युग को शारीरिक रूप से ही नहीं बल्कि मानसिक रूप से भी ऊपर उठाने की आवश्यकता है तथा उच्च मानसिक स्तर पर सोचने की आवश्यकता है। क्योंकि अतिमानसिकता इस आणविक युग के साथ-साथ ही विकसित हो रही है।” सत्याग्रह का अर्थ है कि सत्य अपनी सावधानी स्वयं रखें। इस सम्बन्ध में हमारा यह सुझाव है कि हमें सत्य के मार्ग पर बाधक नहीं बनना चाहिए। सत्य को उसका काम अपने ढंग से करने दे अर्थात् हम मानसिक स्तर से ऊपर उठ जाये तो सत्याग्रह निश्चित रूप से प्रगति करेगा। हमारा मानना है कि भारत को गांधीजी ने सत्याग्रह के अधीन सामूहिक रूप से खड़ा होने के लिए नई शक्ति प्रदान की थी। यदि व्यक्ति आज के इस आणविक युग में अहिंसा की शक्ति को छोड़कर हिंसा की इतनी शक्ति प्राप्त कर ले कि वह एक स्विच दबाते ही पूरा विश्व बूचड़ खाना बन जाए तो हमें ऐसी विनाशक शक्ति नहीं चाहिए। जो एक स्थान से ही पूरे विश्व में फैल जाये। आज के युग में यदि सत्याग्रह इस विनाश को नहीं रोक सकता है तो यह अर्थहीन हो जाएगा। विश्वयुद्ध ने गांधीजी को दावे के साथ यह कहने का अवसर दिया कि युद्ध का न्याय से कोई सम्बन्ध नहीं होता। हमारा मानना है कि अणु बम ने उस सुन्दर भावना को मार दिया है। जिसने मानवता को कई युगों तक जीवित रखा। पहले युद्ध के तथाकथित नियम हुआ करते थे जो इसको सहनीय बना दिया करते थे। परन्तु आज ये आणविक युद्ध ताकत के अलावा कोई अन्य नियम नहीं जानता। इसलिए आज इस हिंसा की ताकत को हिंसा से मिटाना नामुमकिन है। इस युग के युद्ध का मुकाबला करने के लिए अहिंसक प्रतिकार की शक्ति ही उपयोगी साबित होगी। आज आणविक युग में सत्याग्रह के स्थान को निश्चित करने के लिए इन परमाणु शक्तियों से डर कर भागने की जरूरत नहीं है। बल्कि गांधीजी के सत्य और अहिंसा की नीति ‘सत्याग्रह’ के माध्यम से इन तानाशाहों का डट कर अहिंसक प्रतिकार करने की अत्यन्त आवश्यकता है। गांधीजी द्वारा प्रतिपादित सत्य और अहिंसा के विचार को आज गंभीरता से लेना होगा। उनके सत्याग्रह के तरीकों से ही अमानवीय शक्तियों का सामना किया जा सकता है। इस युग में गांधीजी की सत्याग्रह एवं अहिंसा की तकनीक का प्रयोग करके अमेरिका में मार्टिन लूथर किंग और दक्षिण अफ्रीका में नेल्सन मंडेला ने सत्याग्रह की महत्ता को सिद्ध कर दिया है। इस प्रकार आज हिंसा के प्रदर्शन पर अहिंसात्मक प्रतिरोध की श्रेष्ठता सिद्ध हो गई है।

### आधुनिक वैश्विक परिप्रेक्ष्य में गांधी का सत्याग्रह

आधुनिक वैश्विक परिप्रेक्ष्य में सत्याग्रह की प्रासंगिकता निरंतर बढ़ती जा रही है। आज का विश्व अनेक जटिल समस्याओं—जैसे युद्ध, आतंकवाद, मानवाधिकार हनन, आर्थिक असमानता तथा पर्यावरण संकट—से जूझ



रहा है। ऐसे समय में गांधी द्वारा प्रतिपादित सत्याग्रह एक नैतिक एवं अहिंसात्मक समाधान के रूप में अत्यंत महत्वपूर्ण सिद्ध होता है। सत्याग्रह का मूल आधार सत्य और अहिंसा है, जो व्यक्ति और समाज दोनों के नैतिक उत्थान पर बल देता है। वर्तमान वैश्विक परिदृश्य में, जहाँ हिंसा और शक्ति-प्रदर्शन को अक्सर समस्या समाधान का माध्यम माना जाता है, वहीं सत्याग्रह एक वैकल्पिक मार्ग प्रस्तुत करता है, जो संवाद, सहिष्णुता और नैतिक बल पर आधारित है। आज विश्व के अनेक देशों में सामाजिक एवं राजनीतिक आंदोलनों में अहिंसात्मक प्रतिरोध का प्रयोग बढ़ा है। इसके अतिरिक्त, पर्यावरण संरक्षण के क्षेत्र में भी सत्याग्रह की उपयोगिता देखी जा सकती है। जलवायु परिवर्तन, प्राकृतिक संसाधनों के अंधाधुंध दोहन तथा प्रदूषण के विरुद्ध चल रहे आंदोलनों में शांतिपूर्ण विरोध और जन-जागरूकता के माध्यम से परिवर्तन लाने का प्रयास किया जा रहा है, जो गांधीवादी सत्याग्रह की ही आधुनिक अभिव्यक्ति है। हालांकि, आधुनिक युग में सत्याग्रह के समक्ष कुछ चुनौतियाँ भी हैं। डिजिटल युग में सूचना का दुरुपयोग, राजनीतिक स्वार्थ, तथा त्वरित परिणामों की अपेक्षा सत्याग्रह की धीमी प्रक्रिया को बाधित करते हैं। फिर भी, नैतिक शक्ति और जनसमर्थन के आधार पर सत्याग्रह आज भी प्रभावी सिद्ध हो सकता है। अतः कहा जा सकता है कि आधुनिक वैश्विक परिप्रेक्ष्य में सत्याग्रह न केवल एक ऐतिहासिक अवधारणा है, बल्कि यह वर्तमान और भविष्य के लिए एक प्रासंगिक एवं प्रभावशाली मार्गदर्शक सिद्धांत है, जो विश्व में शांति, न्याय और सतत विकास की स्थापना में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है।

### निष्कर्ष एवं सुझाव

आज अणु युग ने मानव के सामने एक चुनौती खड़ी कर दी है। युग-युग से मानव आपस में लड़ता झगड़ता आया है और फिर भी मानव जाति टिकी हुई है। किंतु आज अणु-युग में मानव को ऐसी गम्भीर चेतावनी दे दी है कि मानव यदि अब एक दूसरे के साथ लड़ना बंद नहीं करेगा तो यह सम्पूर्ण मानव जाति का विनाश कर बैठेगा। इसलिए आज मानव समाज से हिंसा को उखाड़ना अति आवश्यक हो गया है इस सम्बन्ध में हमारी राय यह है कि मनुष्य अपने पड़ोसी के साथ शांतिपूर्वक भाईचारे के साथ रह सके, ऐसी नयी जीवन पद्धति को अपनाना जरूरी हो गया है। आज के इस आणविक युग में मानवता को आगे का रास्ता ठीक से दिखाई नहीं दे रहा है। पिछले कुछ वर्षों से उसके सामने नये-नये विचार आये, नये-नये रास्ते दिखाई दिये, उन सबका अनुभव उसे प्राप्त हुआ है। कल्याणकारी राज्य भी बना, समाजवादी राज्य की और साम्यवादी राज्य की भी स्थापना हुई। ये आज की दुनियां के वे नये-नये नारे, नयी-नयी विचार-धारायें थी जिन्होंने लाखों करोड़ों लोगों को आकर्षित किया और इन नारों के मातहत बड़ी-बड़ी क्रांतियां हुईं लेकिन उन सबमें मानव समाज की जो समस्याएं हैं उन सब का समाधान नहीं हुआ, शांति का मार्ग नहीं मिला। ऐसे समय में गांधीजी के बताये हुए रास्ते का अवलोकन करें तो यही निष्कर्ष निकलता है कि आज के इस अणु युग में मानव सभ्यता को विनाश से बचाने के लिए केवल गांधीजी की सत्य और अहिंसा की नीति 'सत्याग्रह' ही एक मात्र विकल्प बचा है।



## सन्दर्भ सूची

1. रामरतन-गांधीजी कान्सेप्ट ऑफ पॉलिटिकल ऑब्लिगेशन, पृ. 160, कलकत्ता मिनिर्वा एसोसियेट्स, 1972
2. रामरतन- उपयुक्त, 160
3. रामरतन- उपयुक्त, 162
4. यंग इण्डिया, 5 जनवरी 1922
5. उपर्युक्त, 16 जुलाई, 1920
6. इण्डियन ऑपिनियन, 26 सितम्बर, 1908
7. मो.क. गांधी आत्मकथा, नवजीवन प्रकाशन मन्दिर, अहमदाबाद, 1957, पृ. 285
8. मो.क. गांधी-उपर्युक्त, 299
9. यंग इण्डिया, 5 जनवरी 1922
10. रामरतन, प्राबलम्बस ऑफ पोलिटिकल ऑब्लिगेशन इन गांधीज पोलिटिकल थॉट, पृ. 221, दिल्ली विश्वविद्यालय, पीएच.डी. शोध प्रवन्ध, 1970
11. रामरतन-उपर्युक्त, सं. 2, पृ. 226
12. वही, सं. 2, पृ. 250-53